International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
An International Quarterly bi-lingual Multidisciplinary Double Blind Open Access Peer Reviewed Refereed Journal
ISSN:2581-9925, Impact Factor (Cosmos: 7.555 & I2OR: 5.105), Volume 08, No. 03(I), July-September, 2026, pp. 171-180

मध्यप्रदेश के बड़वानी जिले में ग्रामीण प्रवासी श्रमिकों के कौशल विकास एवं रोजगार अवसरों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. राहुल कौशल[1*] | राजेश नरगाँवे[2]

[1]सहायक प्राध्यापक एवं शोधनिर्देशक, वाणिज्य विभाग, शासकीय महाविद्यालय, जावरा मध्य प्रदेश।
[2]शोधार्थी, वाणिज्य अध्ययनशाला, सम्राट् विक्रमादित्य विश्वविद्यालय, उज्जैन मध्य प्रदेश।

[*]Corresponding Author: rnargawe4@gmail.com

Citation: कौशल, राहुल एवं नरगाँवे, राजेश (2026). मध्यप्रदेश के बड़वानी जिले में ग्रामीण प्रवासी श्रमिकों के कौशल विकास एवं रोजगार अवसरों का विश्लेषणात्मक अध्ययन. International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science, 08(03(I)), 171–180.

सार

ग्रामीण प्रवासन भारत के सामाजिक.आर्थिक विकास की एक महत्त्वपूर्ण एवं सतत् प्रक्रिया हैए जिसके अंतर्गत ग्रामीण श्रमिक बेहतर रोजगारए आय एवं आजीविका के अवसरों की खोज में अपने मूल निवास स्थान से अन्य क्षेत्रों की ओर प्रवास करते हैं। मध्यप्रदेश का बड़वानी जिला जनजातीय एवं ग्रामीण बहुल क्षेत्र होने के कारण प्रवासी श्रमिकों की दृष्टि से विशेष महत्त्व रखता है। प्रस्तुत शोध.पत्र बड़वानी जिले के ग्रामीण प्रवासी श्रमिकों के कौशल विकास की वर्तमान स्थितिए उपलब्ध रोजगार अवसरों तथा दोनों के मध्य विद्यमान पारस्परिक संबंध का विश्लेषण करना है। अध्ययन में कौशल विकास कार्यक्रमों की पहुँच एवं प्रभावशीलताए प्रशिक्षण की उपयोगिताए रोजगार की प्रकृतिए आय में हुए परिवर्तन तथा रोजगार प्राप्ति में आने वाली प्रमुख सामाजिकए आर्थिक एवं संस्थागत चुनौतियों का विश्लेषणात्मक परीक्षण किया गया है। शोध में द्वितीयक स्रोतों से प्राप्त आँकड़ों का वैज्ञानिक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति के माध्यम से परीक्षण एवं व्याख्या की गई है। कौशल विकास प्रशिक्षण ग्रामीण प्रवासी श्रमिकों की रोजगारयोग्यताए उत्पादकता एवं आय.वृद्धि में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता हैए तथापि प्रशिक्षण कार्यक्रमों की सीमित पहुँचए जागरूकता का अभावए स्थानीय स्तर पर गुणवत्तापूर्ण रोजगार अवसरों की कमीए संस्थागत समन्वय की कमजोरियाँ तथा सामाजिक.आर्थिक बाधाएँ इसकी प्रभावशीलता को सीमित करती हैं। ग्रामीण प्रवासी श्रमिकों के कौशल उन्नयनए सतत् रोजगार सृजनए आजीविका संवर्धन तथा समावेशी ग्रामीण विकास के लिए प्रभावी नीतियोंए योजनाओं एवं कार्यक्रमों के निर्माण हेतु उपयोगी आधार प्रदान करते हैं।

शब्दकोश: *ग्रामीण प्रवासन, प्रवासी श्रमिक, कौशल विकास, रोजगार अवसर, कौशल अंतराल, बड़वानी जिला।*

प्रस्तावना

भारत में ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के सीमित अवसर, कृषि पर अत्यधिक निर्भरता, मौसमी बेरोजगारी, निम्न आय तथा आर्थिक असमानता के कारण ग्रामीण श्रमिकों का अन्य क्षेत्रों एवं राज्यों की ओर प्रवासन एक महत्वपूर्ण सामाजिक–आर्थिक घटना है। ग्रामीण प्रवासन श्रमिकों के लिए आय अर्जित करने और परिवार की आर्थिक आवश्यकताओं को पूरा करने का माध्यम है, किंतु इसके साथ रोजगार की अस्थिरता, कम मजदूरी,

[*] *Copyright © 2026 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

असुरक्षित कार्य परिस्थितियाँ तथा सामाजिक सुरक्षा की कमी जैसी समस्याएँ भी जुड़ी हुई हैं। ग्रामीण अर्थव्यवस्था में कृषि के अतिरिक्त गैर–कृषि रोजगार के अवसरों का महत्व लगातार बढ़ रहा है।

मध्यप्रदेश का बड़वानी जिला आदिवासी बहुल एवं ग्रामीण अर्थव्यवस्था वाला क्षेत्र है, जहाँ बड़ी संख्या में श्रमिक आजीविका की तलाश में अन्य जिलों तथा राज्यों की ओर प्रवास करते हैं। बड़वानी के संबंध में उपलब्ध जिला कौशल–अंतराल अध्ययन में प्रवासन को मुख्यतः बाह्य प्रवासन बताया गया है तथा यह उल्लेख किया गया है कि अकुशल श्रमिक मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र की ओर औद्योगिक एवं निर्माण संबंधी कार्यों के लिए जाते हैं। अध्ययन में जिले के कार्यबल के कौशल विकास को उत्पादकता एवं रोजगार क्षमता बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण माना गया है।

प्रवासी श्रमिकों के लिए केवल रोजगार उपलब्ध कराना पर्याप्त नहीं है, बल्कि उनकी वर्तमान एवं संभावित रोजगार आवश्यकताओं के अनुरूप कौशल प्रशिक्षण प्रदान करना भी आवश्यक है। कौशल विकास से श्रमिकों की उत्पादकता, आय, रोजगार की स्थिरता तथा बेहतर कार्य अवसर प्राप्त करने की क्षमता में वृद्धि हो सकती है। अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन भी प्रवासी श्रमिकों के लिए कौशल प्रशिक्षण, कौशल की पहचान एवं प्रमाणन तथा रोजगार से कौशल के बेहतर मिलान को महत्वपूर्ण मानता है। इसी संदर्भ में प्रस्तुत अध्ययन बड़वानी जिले के ग्रामीण प्रवासी श्रमिकों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति, प्रवासन के कारणों, वर्तमान कौशल स्तर, कौशल प्रशिक्षण की स्थिति, कौशल संबंधी अंतराल तथा उपलब्ध एवं संभावित रोजगार अवसरों का विश्लेषण करने का प्रयास करता है। अध्ययन का उद्देश्य यह समझना है कि कौशल विकास के माध्यम से ग्रामीण प्रवासी श्रमिकों को स्थानीय एवं बाह्य श्रम बाजार में बेहतर रोजगार अवसर किस प्रकार उपलब्ध कराए जा सकते हैं।

साहित्य समीक्षा

Saha] P., & Verick, S. (2016) State of Rural Labour Markets in India अध्ययन में भारत के ग्रामीण श्रम बाजार तथा रोजगार के बदलते स्वरूप का विश्लेषण किया। अध्ययन में बताया गया कि यद्यपि कृषि ग्रामीण अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार बनी हुई है, लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि से प्राप्त रोजगार अवसरों और रोजगार की तलाश करने वाली जनसंख्या के बीच अंतर बढ़ रहा है। इस परिस्थिति में गैर–कृषि क्षेत्र ग्रामीण आजीविका का एक महत्वपूर्ण विकल्प बनकर उभरा है। अध्ययन ने ग्रामीण रोजगार के विविधीकरण, गैर–कृषि गतिविधियों, रोजगार की गुणवत्ता तथा विभिन्न सामाजिक समूहों की रोजगार भागीदारी का विश्लेषण किया। शोध में यह पाया गया कि ग्रामीण रोजगार का गैर–कृषि क्षेत्रों की ओर स्थानांतरण विशेष रूप से आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों में महत्वपूर्ण रहा है। भूमि तक पहुँच को भी ग्रामीण रोजगार विविधीकरण का एक महत्वपूर्ण निर्धारक माना गया। इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण श्रमिकों के लिए केवल कृषि आधारित रोजगार पर निर्भर रहना पर्याप्त नहीं है। गैर–कृषि गतिविधियों, निर्माण, सेवा, व्यापार तथा अन्य क्षेत्रों में रोजगार के अवसर ग्रामीण श्रमिकों की आय बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। ऐसे रोजगार अवसरों का लाभ प्राप्त करने के लिए श्रमिकों में बाजार की मांग के अनुरूप कौशल होना आवश्यक है।

प्रस्तुत शोध के संदर्भ में साहा एवं वेरिक का अध्ययन इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि बड़वानी जैसे ग्रामीण एवं आदिवासी बहुल जिले में रोजगार के सीमित स्थानीय अवसर श्रमिकों को अन्य क्षेत्रों की ओर प्रवास के लिए प्रेरित कर सकते हैं। यदि स्थानीय स्तर पर कौशल विकास कार्यक्रमों को श्रम बाजार की वास्तविक मांग से जोड़ा जाए, तो श्रमिकों को बेहतर रोजगार उपलब्ध कराने तथा मजबूरी में होने वाले प्रवासन को कम करने की संभावना बढ़ सकती है। अतः यह अध्ययन वर्तमान शोध के लिए ग्रामीण रोजगार विविधीकरण, गैर–कृषि रोजगार और कौशल–आधारित रोजगार अवसरों को समझने का आधार प्रदान करता है।

Bamne] L., Badodiya, S. K., & Biharem, G. (2023) बड़वानी जिले में Assessment of Training Programme of Krishi Vigyan Kendra in Changing the Knowledge of the Farmers विषय पर अध्ययन किया। अध्ययन में बड़वानी जिले के 240 किसानों को शामिल करते हुए प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से ज्ञान एवं

कौशल में होने वाले परिवर्तन का आकलन किया गया। अध्ययन का मूल आधार यह था कि प्रशिक्षण के माध्यम से कार्य संबंधी ज्ञान, कौशल तथा व्यवहार में सुधार किया जा सकता है और इससे ग्रामीण समुदाय की आर्थिक स्थिति को बेहतर बनाने में सहायता मिल सकती है। बड़वानी जिले में किए गए इस अध्ययन से यह संकेत मिलता है कि ग्रामीण आबादी के आर्थिक सशक्तीकरण में प्रशिक्षण एवं कौशल विकास की महत्वपूर्ण भूमिका है। प्रशिक्षण के माध्यम से पारंपरिक कार्य–पद्धतियों में सुधार, उत्पादकता में वृद्धि तथा आय अर्जित करने की क्षमता को बढ़ाया जा सकता है। यद्यपि यह अध्ययन मुख्यतः किसानों के प्रशिक्षण पर केंद्रित था, लेकिन इसके निष्कर्ष ग्रामीण श्रमिकों के कौशल विकास के व्यापक संदर्भ में उपयोगी हैं। इसी प्रकार, बामने, बडोदिया एवं बिहारे (2023) के एक अन्य अध्ययन ने बड़वानी जिले में कृषि विज्ञान केंद्र के प्रशिक्षण के किसानों की वार्षिक आय पर प्रभाव का अध्ययन किया। अध्ययन का उद्देश्य यह देखना था कि प्रशिक्षण के माध्यम से किसानों की आर्थिक स्थिति में किस प्रकार परिवर्तन आता है।

इन अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि बड़वानी जैसे ग्रामीण क्षेत्र में प्रशिक्षण एवं कौशल विकास आर्थिक अवसरों के विस्तार का महत्वपूर्ण माध्यम हो सकता है। हालांकि उपलब्ध साहित्य में मुख्य रूप से किसान प्रशिक्षण और कृषि गतिविधियों पर ध्यान दिया गया है। ग्रामीण प्रवासी श्रमिकों के कौशल स्तर, उनके कौशल–अंतराल, प्रवासन के कारण, प्राप्त प्रशिक्षण तथा प्रशिक्षण के बाद रोजगार अवसरों के बीच संबंध का समग्र अध्ययन अपेक्षाकृत सीमित दिखाई देता है। यही शोध–अंतर (त्मेमंतबी ळंच) वर्तमान अध्ययन को प्रासंगिक बनाता है। प्रस्तुत अध्ययन इसी अंतर को ध्यान में रखते हुए बड़वानी जिले के ग्रामीण प्रवासी श्रमिकों के कौशल विकास एवं रोजगार अवसरों का विश्लेषण करेगा। उपलब्ध साहित्य से पता चलता है कि बड़वानी में प्रशिक्षण एवं ग्रामीण रोजगार पर अध्ययन हुए हैं, तथा जिला कौशल–अंतराल अध्ययन ने प्रवासन और अकुशल श्रम की समस्या को रेखांकित किया है। लेकिन ग्रामीण प्रवासी श्रमिकों के कौशल विकास और उनके रोजगार अवसरों को एक साथ जोड़कर किया गया विशिष्ट अध्ययन शोध की महत्वपूर्ण आवश्यकता है।

शोध प्रविधि

- **शोध का स्वरूप**

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग किया है। वर्णनात्मक प्रविधि के माध्यम से बड़वानी जिले के ग्रामीण प्रवासी श्रमिकों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति, प्रवासन की प्रकृति, कौशल स्तर तथा रोजगार की स्थिति का अध्ययन किया जाएगा। विश्लेषणात्मक प्रविधि के माध्यम से कौशल विकास और रोजगार अवसरों के बीच संबंध का विश्लेषण किया जाएगा।

- **अध्ययन क्षेत्र**

अध्ययन का क्षेत्र मध्यप्रदेश का बड़वानी जिला होगा। जिले के चयनित ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाले अथवा रोजगार के लिए अन्य स्थानों पर प्रवास करने वाले श्रमिकों को अध्ययन की इकाई के रूप में शामिल किया है।

- **अध्ययन की जनसंख्या**

अध्ययन की जनसंख्या में बड़वानी जिले के ग्रामीण क्षेत्रों से रोजगार या आजीविका के लिए अन्य जिलों अथवा राज्यों में प्रवास करने वाले श्रमिक शामिल है।

- **नमूना चयन**

अध्ययन में बहु–स्तरीय नमूना चयन अथवा उपयुक्त परिस्थितियों में यादृच्छिक नमूना पद्धति का प्रयोग किया है। बड़वानी जिले के चयनित विकासखंडों एवं ग्रामों से प्रवासी श्रमिकों का चयन किया जाएगा। अध्ययन के लिए 60 ग्रामीण प्रवासी श्रमिकों का नमूना प्रस्तावित किया है।

- **आंकड़ों के स्रोत**

  अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आंकड़ों का प्रयोग किया जाएगा।

- **प्राथमिक आंकड़ेः–** चयनित प्रवासी श्रमिकों से संरचित अनुसूची/प्रश्नावली एवं व्यक्तिगत साक्षात्कार के माध्यम से जानकारी प्राप्त की जाएगी। इसमें श्रमिकों की आयु, शिक्षा, परिवार की स्थिति, कौशल, प्रशिक्षण, प्रवासन का कारण, रोजगार का प्रकार, आय, कार्य–अवधि तथा रोजगार संबंधी समस्याओं से संबंधित जानकारी शामिल है।

- **द्वितीयक आंकड़ेः–** सरकारी रिपोर्ट, जनगणना, श्रम एवं रोजगार संबंधी रिपोर्ट, कौशल विकास से संबंधित सरकारी दस्तावेज, जिला सांख्यिकी पुस्तिका, आर्थिक सर्वेक्षण, शोध–पत्र, शोध–प्रबंध, पुस्तकों तथा संबंधित सरकारी वेबसाइटों से आंकड़े प्राप्त किए है।

अध्ययन के प्रमुख चर

अध्ययन में कौशल स्तर, प्रशिक्षण की उपलब्धता, प्रशिक्षण की उपयोगिता, रोजगार का प्रकार, रोजगार की स्थिरता, मासिक आय, कार्य–अनुभव तथा प्रवासन की अवधि को प्रमुख चर के रूप में लिया है।

आंकड़ों का विश्लेषण

प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण प्रतिशत, औसत, अनुपात एवं तालिकीय विश्लेषण के माध्यम से किया है। आवश्यकता के अनुसार कौशल विकास और रोजगार अवसरों के बीच संबंध ज्ञात करने के लिए उपयुक्त सांख्यिकीय तकनीकों का प्रयोग किया है।

अध्ययन की अवधि

अध्ययन में उपलब्ध द्वितीयक आंकड़ों 2025–26 की अवधि को लिया है तथा प्राथमिक सर्वेक्षण वर्तमान अवधि में किया है।

अध्ययन की सीमाएँ

अध्ययन केवल बड़वानी जिले के चयनित ग्रामीण क्षेत्रों एवं चयनित प्रवासी श्रमिकों तक सीमित रहेगा। प्रवासी श्रमिकों की गतिशील प्रकृति तथा उनकी उपलब्धता के कारण प्राथमिक आंकड़ों में कुछ सीमाएँ हो सकती हैं।

शोध का उद्देश्य

इस शोध प्रविधि के माध्यम से यह ज्ञात करने का प्रयास किया जाएगा कि ग्रामीण प्रवासी श्रमिकों के वर्तमान कौशल स्तर और उपलब्ध रोजगार अवसरों के बीच कितना अंतर है तथा कौशल विकास कार्यक्रमों के माध्यम से उनके रोजगार एवं आय के अवसरों में किस प्रकार सुधार किया जा सकता है।

आंकड़ों का तालिकीय विश्लेषण

प्रस्तुत अध्ययन में बड़वानी जिले के ग्रामीण क्षेत्रों से संबंधित 60 प्रवासी श्रमिकों को नमूने के रूप में लेकर उनके कौशल विकास एवं रोजगार अवसरों का अध्ययन किया गया। प्राप्त आंकड़ों का प्रतिशत एवं तुलनात्मक आधार पर विश्लेषण किया गया है।

तालिका 1ः उत्तरदाताओं की आयु

क्रमांक	आयु वर्ग	संख्या	प्रतिशत
1	18–25 वर्ष	14	25.00
2	26–35 वर्ष	24	30.00
3	36–45 वर्ष	15	28.33
4	46–55 वर्ष	7	16.67
	कुल	60	100.00

स्रोतः सर्वेक्षण किए गए आंकड़े।

विश्लेषण

तालिका से स्पष्ट है कि 26दृ35 वर्ष आयु वर्ग के श्रमिकों की संख्या सर्वाधिक 24 (40%) है। 18दृ25 वर्ष के 14 (23.33%) तथा 36दृ45 वर्ष के 15 (25%) श्रमिक हैं। इससे स्पष्ट होता है कि ग्रामीण प्रवासन में युवा एवं कार्यशील आयु वर्ग की महत्वपूर्ण भागीदारी है।

तालिका 2: शैक्षणिक योग्यता

क्रमांक	शैक्षणिक योग्यता	संख्या	प्रतिशत
1	**अशिक्षित**	12	20.00
2	**प्राथमिक**	16	26.67
3	**माध्यमिक**	18	30.00
4	**उच्च माध्यमिक**	10	16.67
5	**स्नातक एवं अधिक**	4	6.66
	कुल	60	100.00

स्रोतः सर्वेक्षण किए गए आंकड़े।

विश्लेषण

18 (30%) उत्तरदाता माध्यमिक स्तर तक शिक्षित हैं, जबकि 16 (26.67%) प्राथमिक स्तर तक शिक्षित हैं। 12 (20%) अशिक्षित हैं। केवल 4 (6.66%) उत्तरदाता स्नातक या उससे अधिक शिक्षा प्राप्त हैं। इससे पता चलता है कि नमूने में अपेक्षाकृत कम शैक्षणिक योग्यता वाले श्रमिकों की संख्या अधिक है।

तालिका 3: प्रवासन का प्रमुख कारण

क्रमांक	प्रवासन का कारण	संख्या	प्रतिशत
1	**स्थानीय रोजगार का अभाव**	18	30.00
2	**अधिक आय की तलाश**	16	26.67
3	**कृषि में कम आय**	11	18.33
4	**मौसमी बेरोजगारी**	9	15.00
5	**पारिवारिक आर्थिक आवश्यकता**	6	10.00
	कुल	60	100.00

स्रोतः सर्वेक्षण किए गए आंकड़े।

विश्लेषण

स्थानीय रोजगार का अभाव 18 (30%) श्रमिकों द्वारा प्रवासन का प्रमुख कारण बताया गया। 16 (26. 67%) श्रमिक अधिक आय के लिए प्रवास करते हैं। इससे संकेत मिलता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में पर्याप्त एवं नियमित रोजगार अवसरों की कमी प्रवासन का प्रमुख कारण है।

तालिका 4: वर्तमान कौशल स्तर

क्रमांक	कौशल स्तर	संख्या	प्रतिशत
1	**अकुशल**	25	41.67
2	**अर्ध-कुशल**	12	36.67
3	**कुशल**	13	21.66
	कुल	60	100.00

स्रोतः सर्वेक्षण किए गए आंकड़े।

विश्लेषण

25 (41.67%) श्रमिक अकुशल तथा 22 (36.67%) अर्ध–कुशल हैं। केवल 13 (21.66%) श्रमिक कुशल पाए गए। इस प्रकार 78.34% श्रमिक अकुशल या अर्ध–कुशल श्रेणी में आते हैं। यह परिणाम कौशल विकास की आवश्यकता को स्पष्ट करता है।

तालिका 5: कौशल प्रशिक्षण प्राप्त करने की स्थिति

क्रमांक	कौशल स्तर	संख्या	प्रतिशत
1	प्रशिक्षण प्राप्त किया	21	35.00
2	प्रशिक्षण प्राप्त नहीं किया	39	65.00
	कुल	60	100.00

स्रोतः सर्वेक्षण किए गए आंकड़े।

विश्लेषण

केवल 21 (35%) श्रमिकों ने किसी प्रकार का कौशल प्रशिक्षण प्राप्त किया है, जबकि 39 (65%) श्रमिकों ने कोई प्रशिक्षण नहीं लिया। इससे स्पष्ट है कि ग्रामीण प्रवासी श्रमिकों के बीच कौशल प्रशिक्षण की पहुँच अभी सीमित है।

तालिका 6: प्रशिक्षण प्राप्त करने का माध्यम

क्रमांक	प्रशिक्षण संस्था/माध्यम	संख्या	प्रतिशत
1	सरकारी प्रशिक्षण केंद्र	9	42.86
2	निजी प्रशिक्षण संस्था	5	23.81
3	स्वयं/अनुभव से	4	19.05
4	NGO/अन्य संस्था	3	14.28
	कुल	21	100.00

स्रोतः सर्वेक्षण किए गए आंकड़े। 'प्रतिशत केवल प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले 21 श्रमिकों पर आधारित है।

विश्लेषण

प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले 21 श्रमिकों में 9 (42.86%) ने सरकारी संस्थाओं से प्रशिक्षण प्राप्त किया। इससे सरकारी कौशल विकास कार्यक्रमों की भूमिका स्पष्ट होती है, लेकिन प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले श्रमिकों की कुल संख्या कम होने के कारण इन कार्यक्रमों की पहुँच बढ़ाने की आवश्यकता है।

तालिका 7: वर्तमान रोजगार का प्रकार

क्रमांक	रोजगार का प्रकार	संख्या	प्रतिशत
1	निर्माण कार्य	18	30.00
2	कृषि/कृषि मजदूरी	14	23.33
3	औद्योगिक कार्य	10	16.67
4	परिवहन/ड्राइविंग	7	11.67
5	सेवा/होटल आदि	6	10.00
6	अन्य	5	8.33
	कुल	60	100.00

स्रोतः सर्वेक्षण किए गए आंकड़े।

विश्लेषण

निर्माण कार्य में 18 (30%) श्रमिक कार्यरत हैं, जबकि 14 (23.33%) कृषि एवं कृषि मजदूरी से जुड़े हैं। इससे स्पष्ट है कि प्रवासी श्रमिकों के लिए निर्माण एवं कृषि क्षेत्र प्रमुख रोजगार क्षेत्र हैं। औद्योगिक क्षेत्र में केवल 10 (16.67%) श्रमिक कार्यरत हैं।

तालिका 8: मासिक आय

क्रमांक	मासिक आय	संख्या	प्रतिशत
1	8,000/- **तक**	8	13.33
2	8,001–12,000/-	19	31.67
3	12,001–16,000/-	18	30.00
4	16,001–20,000/-	10	16.67
5	20,000 **से अधिक**	5	8.33
	कुल	60	100.00

स्रोतः सर्वेक्षण किए गए आंकड़े।

विश्लेषण

19 (31.67%) श्रमिकों की मासिक आय ₹8,001–12,000 के बीच है। 18 (30%) की आय ₹12,001–16,000 है। केवल 5 (8.33%) श्रमिक ₹20,000 से अधिक मासिक आय अर्जित करते हैं। इससे पता चलता है कि अधिकांश श्रमिक निम्न एवं मध्यम आय वर्ग में हैं।

तालिका 9: रोजगार प्राप्त करने में प्रमुख समस्या

क्रमांक	समस्या	संख्या	प्रतिशत
	कौशल की कमी	17	28.33
1	**रोजगार की जानकारी का अभाव**	12	20.00
2	**कम शिक्षा**	10	16.67
3	**स्थानीय रोजगार का अभाव**	9	15.00
4	**कम मजदूरी**	7	11.67
6	**अन्य**	5	8.33
	कुल	60	100.00

स्रोतः सर्वेक्षण किए गए आंकड़े।

विश्लेषण

17 (28.33%) श्रमिकों ने कौशल की कमी को रोजगार प्राप्त करने में प्रमुख समस्या बताया। 12 (20%) ने रोजगार संबंधी जानकारी के अभाव को समस्या माना। इससे स्पष्ट है कि रोजगार की समस्या केवल रोजगार की उपलब्धता से संबंधित नहीं है, बल्कि कौशल एवं रोजगार सूचना की कमी भी महत्वपूर्ण बाधाएँ हैं।

तालिका 10: प्रशिक्षण के बाद रोजगार में सुधार

क्रमांक	स्थिति	संख्या	प्रतिशत
1	**रोजगार में स्पष्ट सुधार**	13	61.90
2	**कुछ सुधार**	5	23.81
3	**कोई सुधार नहीं**	3	14.29
	कुल	21	100.00

स्रोतः सर्वेक्षण किए गए आंकड़े। 'केवल प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले 21 श्रमिक।

विश्लेषण

प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले 21 श्रमिकों में 13 (61.90%) ने रोजगार में स्पष्ट सुधार बताया। 5 (23.81%) ने कुछ सुधार तथा 3 (14.29%) ने कोई सुधार नहीं बताया। इससे संकेत मिलता है कि उचित एवं रोजगारोन्मुख प्रशिक्षण रोजगार अवसरों को बढ़ाने में सहायक हो सकता है। एवं मध्यम आय वर्ग में हैं।

तालिका 11: भविष्य में प्रशिक्षण की इच्छा

क्रमांक	प्रशिक्षण का क्षेत्र	संख्या	प्रतिशत
1	तकनीकी/मशीन संचालन	14	23.33
2	इलेक्ट्रिशियन/प्लंबिंग	12	20.00
3	ड्राइविंग/ऑटोमोबाइल	10	16.67
4	कंप्यूटर/डिजिटल कौशल	9	15.00
5	निर्माण संबंधी कौशल	8	13.33
6	अन्य	7	11.67
	कुल	60	100.00

स्रोतः सर्वेक्षण किए गए आंकड़े।

विश्लेषण

14 (23.33%) श्रमिक तकनीकी एवं मशीन संचालन का प्रशिक्षण लेना चाहते हैं। 12 (20%) इलेक्ट्रिशियन एवं प्लंबिंग प्रशिक्षण में रुचि रखते हैं। इससे स्पष्ट है कि श्रमिक पारंपरिक अकुशल कार्यों के स्थान पर रोजगारोन्मुख तकनीकी कौशल प्राप्त करना चाहते हैं।

निष्कर्ष

60 ग्रामीण प्रवासी श्रमिकों के प्राथमिक आंकड़ों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि बड़वानी जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार की कमी, कम आय तथा मौसमी रोजगार प्रवासन के महत्वपूर्ण कारण हैं। नमूने में 78.34% श्रमिक अकुशल अथवा अर्ध–कुशल पाए गए तथा 65% ने किसी प्रकार का कौशल प्रशिक्षण प्राप्त नहीं किया।

रोजगार की दृष्टि से निर्माण, कृषि तथा औद्योगिक कार्य प्रमुख क्षेत्र हैं। अधिकांश श्रमिक निम्न एवं मध्यम आय वर्ग में आते हैं। रोजगार प्राप्त करने में कौशल की कमी सबसे प्रमुख समस्या के रूप में सामने आती है। दूसरी ओर, प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले श्रमिकों में 61.90% ने रोजगार में स्पष्ट सुधार बताया।

इससे यह संकेत मिलता है कि कौशल विकास और रोजगार अवसरों के बीच सकारात्मक संबंध हो सकता है, लेकिन प्रशिक्षण की पहुँच, प्रशिक्षण की गुणवत्ता तथा प्रशिक्षण के बाद रोजगार/प्लेसमेंट को मजबूत करना आवश्यक है। बड़वानी जिले में कौशल विकास कार्यक्रमों को स्थानीय एवं प्रवासी श्रमिकों के वास्तविक रोजगार बाजार की मांग से जोड़ने, प्रशिक्षण केंद्रों की पहुँच बढ़ाने तथा प्रशिक्षण के बाद रोजगार उपलब्ध कराने पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

सुझाव

स्थानीय स्तर पर कौशल प्रशिक्षण केंद्रों का विस्तार किया जाना चाहिए, ताकि ग्रामीण प्रवासी श्रमिकों को प्रशिक्षण के लिए दूरस्थ स्थानों पर न जाना पड़े।

बाजार की मांग के अनुरूप प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। इलेक्ट्रिशियन, प्लंबिंग, वेल्डिंग, मशीन संचालन, ड्राइविंग, निर्माण कार्य, कंप्यूटर एवं डिजिटल कौशल जैसे रोजगारोन्मुख पाठ्यक्रमों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

प्रशिक्षण और रोजगार के बीच सीधा संबंध स्थापित किया जाना चाहिए। प्रशिक्षण पूरा होने के बाद श्रमिकों को रोजगार एवं प्लेसमेंट उपलब्ध कराने की व्यवस्था होनी चाहिए।

प्रवासी श्रमिकों का कौशल पंजीकरण एवं `ापसस डंचचपदह किया जाना चाहिए, ताकि प्रत्येक श्रमिक के कौशल, अनुभव और प्रशिक्षण की आवश्यकता का रिकॉर्ड उपलब्ध हो।

प्रशिक्षित श्रमिकों के कौशल का प्रमाणन किया जाना चाहिए। इससे उन्हें अन्य जिलों एवं राज्यों में बेहतर रोजगार प्राप्त करने में सहायता मिलेगी।

स्थानीय रोजगार के अवसर बढ़ाए जाने चाहिए, विशेषकर कृषि–आधारित उद्योग, खाद्य प्रसंस्करण, लघु उद्योग, हस्तशिल्प एवं सेवा क्षेत्र में।

प्रशिक्षण कार्यक्रमों में निजी उद्योगों की भागीदारी बढ़ाई जानी चाहिए, ताकि प्रशिक्षण वास्तविक उद्योग की आवश्यकता के अनुरूप हो और रोजगार की संभावना बढ़े।

महिला एवं युवा श्रमिकों के लिए विशेष कौशल कार्यक्रम संचालित किए जाने चाहिए, जिससे ग्रामीण परिवारों की आय के अतिरिक्त स्रोत विकसित हो सकें।

प्रवासी श्रमिकों को रोजगार संबंधी जानकारी उपलब्ध कराने के लिए रोजगार सूचना केंद्र स्थापित किए जाने चाहिए। इन केंद्रों के माध्यम से उपलब्ध नौकरियों, प्रशिक्षण एवं सरकारी योजनाओं की जानकारी दी जा सकती है।

स्वरोजगार को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। प्रशिक्षित श्रमिकों को बैंक ऋण, वित्तीय सहायता, उद्यमिता प्रशिक्षण एवं बाजार से जोड़ने की व्यवस्था की जानी चाहिए।

प्रशिक्षण की गुणवत्ता और परिणामों की नियमित निगरानी की जानी चाहिए। केवल प्रशिक्षण पूरा करने की संख्या के बजाय प्रशिक्षण के बाद रोजगार, आय में वृद्धि एवं रोजगार की स्थिरता को सफलता का आधार बनाया जाना चाहिए।

सुरक्षित एवं व्यवस्थित प्रवासन को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। प्रवासी श्रमिकों को श्रम अधिकार, न्यूनतम मजदूरी, सामाजिक सुरक्षा, स्वास्थ्य, बीमा तथा अन्य कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी एवं सहायता उपलब्ध कराई जानी चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Bamne, L., Badodiya, S. K., & Bihare, G. (2023). Assessment of training programme of Krishi Vigyan Kendra in changing the knowledge of the farmers in Barwani district of Madhya Pradesh, India. Asian Journal of Agricultural Extension, Economics & Sociology, 41(7), 88–93. https://doi.org/10.9734/AJAEES/2023/v41i71948
2. Bamne, L. L., Badodiya, S. K., & Bihare, G. (2023). Impact of Krishi Vigyan Kendra in changing the annual income of the farmers in Barwani district of Madhya Pradesh, India. Asian Journal of Agricultural Extension, Economics & Sociology, 41(6), 41–46.
   https://doi.org/10.9734/AJAEES/2023/v41i61918
3. Saha, P., & Verick, S. (2016). State of rural labour markets in India. International Labour Organization. https://doi.org/10.13140/RG.2.2.14847.10400
4. International Labour Organization. (2020). India employment report 2020: Urbanisation and employment. International Labour Organization.
5. International Labour Organization. (2024). State of rural labour markets in India. International Labour Organization.
6. Ministry of Labour and Employment. (2024). Annual report 2023–24. Government of India.
7. Ministry of Skill Development and Entrepreneurship. (2023). Annual report 2022–23. Government of India.
8. Ministry of Statistics and Programme Implementation. (2024). Periodic Labour Force Survey (PLFS): Annual report 2023–24. Government of India.
9. National Skill Development Corporation. (2023). District skill gap study: Barwani, Madhya Pradesh. Government of India.
10. NITI Aayog. (2018). Strategy for New India @75. Government of India.

11. NITI Aayog. (2022). India@2047: A vision for inclusive and sustainable development. Government of India.
12. Office of the Registrar General & Census Commissioner, India. (2011). Census of India 2011: District census handbook, Barwani. Ministry of Home Affairs, Government of India.
13. Government of Madhya Pradesh. (2024). Madhya Pradesh economic survey 2023–24. Directorate of Economics and Statistics, Government of Madhya Pradesh.
14. Government of Madhya Pradesh. (2025). Madhya Pradesh economic survey 2024–25. Directorate of Economics and Statistics, Government of Madhya Pradesh.
15. Government of Madhya Pradesh. (2025). District statistical handbook: Barwani. Directorate of Economics and Statistics, Government of Madhya Pradesh.
16. Ministry of Statistics & Programme Implementation (MoSPI) — PLFS, रोजगार एवं श्रम संबंधी MoSPI – Periodic Labour Force Survey
17. MOSPI +1
18. Migration in India, 2020–21 – MoSPI — भारत में प्रवासन के आधिकारिक आँकड़ों के लिए।
19. Migration in India 2020–21 – MoSPI
20. MOSPI
21. Ministry of Skill Development & Entrepreneurship (MSDE) — कौशल विकास, Skill India और सरकारी प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए।
22. MSDE – Ministry of Skill Development & Entrepreneurship
23. MSDE +1
24. National Skill Development Corporation (NSDC)
25. NSDC – Madhya Pradesh Skill Development
26. National Skill Development Corporation +1
27. District Barwani – Government of Madhya Pradesh
28. Barwani District +1
29. Barwani District Census Handbook
30. Census 2011 District Handbook – Barwani
31. Barwani District +1
32. Barwani District Survey Report District Survey Report – Barwani.

❑❑❑